

## सिद्ध-पूजा

### Sid'dha-Pūjā

"कवि श्री जुगलकिशोर युगल"  
Kavi śrī Jugalakiśōra "yugal"

(हरिगीतिका)

**निज वज्र-पौरुष से प्रभो! अंतर-कलुष सब हर लिये ।**

**प्रांजल प्रदेश-प्रदेश में, पीयूष-निर्झर झार गये ॥**

**सर्वोच्च हो अतएव बसते, लोक के उस शिखर रे ।**

**तुम को हृदय में स्थाप, मणि-मुक्ता चरण को चूमते ॥**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट्! (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठः! ठः! (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! (सन्निधिकरणम्)

(Harigītikā)

**Nija vajra-pauruṣa sē prabhō! Antara-kaluṣa saba hara liyē |**

**Prāñjala pradēṣa-pradēṣa mēṁ, pīyūṣa-nirjhara jhara gayē ॥**

**Sarvōcca hō ata'eva basatē, lōka kē usa śikhara rē!**

**Tuma kō hṛdaya mēṁ sthāpa, maṇi-muktā caraṇa kō cūmatē ॥**

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatē sid'dhaparamēṣṭhin! Atra avatara! avatara! sanvauṣat! (Āhvānanam)

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatē sid'dhaparamēṣṭhin! Atra tiṣṭha! tiṣṭha! tha!: tha!: (Sthāpanam)

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatē sid'dhaparamēṣṭhin! Atra mama sannihitō bhava bhava vaṣat!

(Sannidhi)

(वीर छन्द)

**शुद्धात्म-सा परिशुद्ध प्रभो! यह निर्मल-नीर चरण लाया ।**

**मैं पीड़ित निर्मम-ममता से, अब इसका अंतिम-दिन आया ॥**

**तुम तो प्रभु अंतर्लीन हुए, तोड़े कृत्रिम सम्बन्ध सभी ।**

**मेरे जीवन-धन तुमको पा, मेरी पहली अनुभूति जगी ॥**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा! ॥

**Śud'dhātama-sā pariśud'dha prabhō! Yaha nirmala-nīra caraṇa lāyā |**

**Maiṁ pīrita nirmama-mamatā sē, aba isakā antima-dina āyā ||**

**Tuma tō prabhu antarlīna hu'ē, tōṛē kṛtrima sambandha sabhī |**

**Mērē jīvana-dhana tumakō pā, mērī pahalī anubhūti jagī ||**

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēṣṭhinē janma-jarā-mṛtyu-vināśanāya jalāṁ  
nirvapāmīti svāhā || 1 ||

मेरे चैतन्य-सदन में प्रभु! धू-धू क्रोधानल जलता है ।  
 अज्ञान-अमा के अंचल में, जो छिपकर पल-पल पलता है ॥  
 प्रभु! जहाँ क्रोध का स्पर्श नहीं, तुम बसे मलय की महकों में ।  
 मैं इसीलिए मलयज लाया, क्रोधासुर भागे पलकों में ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

**Mērē caitan'ya-sadana mēm prabhu! Dhū-dhū krōdhānala jalatā hai |**  
**Ajñāna-amā kē añcala mēm, jō chipakara pala-pala palatā hai ||**  
**Prabhu! Jahāṁ krōdha kā sparśa nahīṁ, tuma basē malaya kī mahakōṁ mēm |**  
**Maiṁ isīlī'ē malayaja lāyā, krōdhāsura bhāgē palakōṁ mēm ||**

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēṣṭhinē sansāratāpa-vināśanāya candanam  
 nirvapāmīti svāhā ||2||

अधिपति प्रभु! धवल-भवन के हो, और धवल तुम्हारा अन्तस्तल ।  
 अंतर के क्षत् सब निःक्षत् कर, उभरा स्वर्णिम-सौंदर्य विमल ॥  
 मैं महामान से क्षत-विक्षत, हँ खंड-खंड लोकांत-विभो ।  
 मेरे मिट्टी के जीवन में, प्रभु! अक्षत की गरिमा भर दो ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

**Adhipati prabhu! Dhavala-bhavana kē hō, aura dhavala tumhārā antastala |**  
**Antara kē kṣat saba ni:Kṣat kara, ubharā svarṇima-saundarya vimala ||**  
**Maiṁ mahāmāna sē kṣata-vikṣata, hūṁ khaṇḍa-khaṇḍa lōkānta-vibhō |**  
**Mērē miṭṭī kē jīvana mēm, prabhu! Akṣata kī garimā bhara dō ||**

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēṣṭhinē akṣayapada-prāptayē akṣatān nirvapāmīti  
 svāhā ||3||

चैतन्य-सुरभि की पुष्प-वाटिका, मैं विहार नित करते हो ।  
 माया की छाया रंच नहीं, हर बिन्दु-सुधा की पीते हो ॥  
 निष्काम प्रवाहित हर हिलोर, क्या काम! काम की ज्वाला से ।  
 प्रत्येक प्रदेश प्रमत्त हुआ, पाताल-मधु-मधुशाला से ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

**Caitan'ya-surabhi kī puṣpa-vāṭikā, mēm vihāra nita karatē hō |**  
**Māyā kī chāyā rañca nahīṁ, hara bindu-sudhā kī pītē hō ||**  
**Niṣkāma pravāhita hara hilōra, kyā kāma! Kāma kī jvālā sē |**  
**Pratyēka pradēśa pramatta hu'ā, pātāla-madhu-madhuśālā sē ||**

ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēṣṭhinē kāmabāṇa-vidhvansanāya puṣparā  
 nirvapāmīti svāhā ||4||

यह क्षुधा देह का धर्म प्रभो! इसकी पहिचान कभी न हुई ।  
 हर पल तन में ही तन्मयता, क्षुत्-तृष्णा अविरल पीन हुई ॥  
 आक्रमण क्षुधा का सह्य नहीं, अतएव लिये हैं व्यंजन ये ।  
 सत्त्वर तृष्णा को तोड़ प्रभो! लो, हम आनंद-भवन पहुँचे ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

**Yaha kṣudhā dēha kā dharma prabhō! Isakī pahicāna kabhī na hu'i |**  
**Hara pala tana mēṁ hī tanmayatā, kṣut-trṣṇā avirala pīna hu'i ||**  
**Ākramaṇa kṣudhā kā sahya nahīṁ, ata'ēva liyē hairīn vyañjana yē |**  
**Satvara trṣṇā kō tōra prabhō! Lō, hama ānanda-bhavana pahuṁcē ||**  
**Ōṁ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēśṭhinē kṣudhārōga-vināśanāya**  
**naivēdyam̄ nirvapāmīti svāhā ||5||**

विज्ञान-नगर के वैज्ञानिक, तेरी प्रयोगशाला! विस्मय ।  
 कैवल्य-कला में उमड़ पड़ा, सम्पूर्ण विश्व का ही वैभव ॥  
 पर तुम तो उससे अतिविरक्त, नित निरखा करते निज-निधियाँ ।  
 अतएव प्रतीक प्रदीप लिये, मैं मना रहा दीपावलियाँ ॥  
 ॐ हीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा/६/

**Vijñāna-nagara kē vaijñānika, tērī prayogaśālā! Vismaya!**  
**Kaivalya-kalā mēṁ umāra paṛā, sampūrṇa viśva kā hī vaibhava ||**  
**Para tuma tō usasē ativirakta, nita nirakhā karatē nija-nidhiyāṁ |**  
**Ata'ēva pratīka pradīpa liyē, maiṁ manā rahā dīpāvaliyāṁ ||**  
**Ōṁ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēśṭhinē mōhāndhakāra-vināśanāya dīparam̄**  
**nirvapāmīti svāhā ||6||**

तेरा प्रासाद महकता प्रभु! अति दिव्य-दशांगी धूपों से ।  
 अतएव निकट नहिं आ पाते, कर्मों के कीट-पतंग अरे ॥  
 इस धूप सुरभि-निर्झरणी से, मेरा पर्यावरण विशुद्ध हुआ ।  
 छक गया योग-निद्रा में प्रभु! सर्वांग अमी है बरस रहा ॥  
 ॐ हीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा/७/

**Tērā prāsāda mahakatā prabhu! Ati divya-daśāṅgī dhūpōṁ sē |**  
**Ata'ēva nikaṭa nahiṁ ā pātē, karmōṁ kē kīṭa-pataṅga arē!!**  
**Isa dhūpa surabhi-nirjharaṇī sē, mērā paryāvaraṇa viśud'dha hu'ā |**  
**Chaka gayā yōga-nidrā mēṁ prabhu! Sarvāṅga amī hai barasa rahā ||**  
**Ōṁ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēśṭhinē aṣṭakarma-dahanāya dhūparam̄ nirvapāmīti**  
**svāhā ||7||**

निज-लीन परम-स्वाधीन बसे, प्रभु! तुम सुरम्य शिव-नगरी में ।  
 प्रतिपल बरसात गगन से हो, रसपान करो शिवगगरी से ॥  
 ये सुरतरुओं के फल साक्षी, यह भव-संतति का अंतिम-क्षण ।  
 प्रभु! मेरे मंडप में आओ, है आज मुक्ति का उद्घाटन ॥  
 ॐ हीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा/८/

**Nija-līna parama-svādhīna basē, prabhu! Tuma suramya śiva-nagarī mēṁ |**  
**Pratipala barasāta gagan se hō, rasapāna karō śivagagarī sē ||**  
**Yē surataru'ōṁ kē phala sākṣī, yaha bhava-santati kā antima-kṣaṇa |**  
**Prabhu! Mērē maṇḍapa mēṁ ā'ō, hai āja mukti kā udghāṭana ||**

ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धाकराधिपतये सिद्धापरामेष्ठिने मोक्षापला-प्राप्तये फलामि निरवामिति  
स्वाहा ॥८॥

तेरे विकीर्ण गुण सारे प्रभु! मुक्ता-मोदक से सघन हुए ।  
अतएव रसास्वादन करते, रे! घनीभूत अनुभूति लिये ॥  
हे नाथ! मुझे भी अब प्रतिक्षण, निज अंतर-वैभव की मस्ती ।  
है आज अर्द्ध की सार्थकता, तेरी अस्ति मेरी बस्ती ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्द्धपद-प्राप्तये अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

Tērē vikīrṇa guṇa sārē prabhu! Muktā-mōdaka sē saghana hu'ē |  
Ata'ēva rasāsvādana karatē, rē! Ghanībhūta anubhūti liyē ||  
Hē nātha! Mujhē bhī aba pratikṣaṇa, nija antara-vaibhava kī mastī |  
Hai āja arghya kī sārthakatā, tērī asti mērī bastī ||

ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धाकराधिपतये सिद्धापरामेष्ठिने अनर्द्धपद-प्राप्तये अर्द्ध निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

## जयमाला

Jayamālā

(दोहा)

चिन्मय हो चिद्रूप प्रभु! जाता-मात्र चिदेश ।  
शोध-प्रबन्ध चिदात्म के, सृष्टा तुम ही एक ॥

(रेखता)

जगाया तुमने कितनी बार! हुआ नहिं चिर-निन्दा का अंत ।  
मदिर-सम्मोहन ममता का, अरे! बेचेत पड़ा मैं संत ॥  
घोर-तम छाया चारों ओर, नहीं निज-सत्ता की पहिचान ।  
निखिल जड़ता दिखती सप्राण, चेतना अपने से अनजान ॥  
जान की प्रतिपल उठे तरंग, झाँकता उसमें आत्मराम ।  
अरे! आबाल सभी गोपाल, सुलभ सबको चिन्मय अभिराम ॥  
किंतु पर-सत्ता मैं प्रतिबद्ध, कीर-मर्कट-सी गहल अनंत ।  
अरे! पाकर खोया भगवान्, न देखा मैंने कभी बसंत ॥  
नहीं देखा निज शाश्वत-देव, रही क्षणिका पर्यय की प्रीति ।  
क्षम्य कैसे हों ये अपराध? प्रकृति की यही सनातन-रीति ॥  
अतः जड़-कर्मों की जंजीर, पड़ी मेरे सर्वात्म-प्रदेश ।  
और फिर नरक-निगोदों बीच, हुए सब निर्णय हे! सर्वेश ॥

घटा घन-विपदा की बरसी, कि टूटी शंपा मेरे शीश ।  
 नरक में पारद-सा तन टूक, निगोदों मध्य अनंती मीच ॥  
 करें क्या स्वर्ग-सुखों की बात! वहाँ की कैसी अद्भुत-टेव ।  
 अंत में बिलखे छह-छह मास, कहें हम कैसे उनको देव ॥  
 दशा चारों गति की दयनीय, दया का किन्तु न यहाँ विधान ।  
 शरण जो अपराधी को दे, अरे! अपराधी वह भगवान् ॥  
 अरो! मिट्टी की काया बीच, महकता चिन्मय भिन्न अतीव ।  
 शुभाशुभ की जड़ता तो दूर, पराया-जान वहाँ परकीय ॥  
 अहो! चित् परम-अकर्ता नाथ! अरे! वह निष्क्रिय तत्त्व-विशेष ।  
 अपरिमित अक्षय वैभव-कोष, सभी जानी का यह परिवेश ॥  
 बताये मर्म अरे! यह कौन, तुम्हारे बिन वैदेही नाथ ।  
 विधाता शिव-पथ के तुम एक, पड़ा मैं तस्कर-दल के हाथ ॥  
 किया तुमने जीवन का शिल्प, खिरे सब मोह-कर्म और गात ।  
 तुम्हारा पौरुष-झंझावात, झड़ गये पीले-पीले पात ॥  
 नहीं प्रजा-आवर्तन शेष, हुए सब आवागमन अशेष ।  
 अरे प्रभु! चिर-समाधि में लीन, एक मैं बसते आप अनेक ॥  
 तुम्हारा चित्-प्रकाश कैवल्य, कहें तुम जायक लोकालोक ।  
 अहो! बस जान जहाँ हो लीन, वही है ज्ञेय वही है भोग ॥  
 योग-चांचल्य हुआ अवरुद्ध, सकल चैतन्य निकल-निष्कंप ।  
 अरे! ॐ योगरहित योगीश! रहो यों काल अनंतानंत ॥  
 जीव कारण-परमात्म त्रिकाल, वही है अंतस्तत्त्व अखंड ।  
 तुम्हें प्रभु! रहा वही अवलंब, कार्य-परमात्म हुए निर्बन्ध ॥  
 अहो! निखरा कांचन चैतन्य, खिले सब आठों कमल पुनीत ।  
 अतीन्द्रिय-सौख्य चिरंतन-भोग, करो तुम ध्वल-महल के बीच ॥  
 उछलता मेरा पौरुष आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ ।  
 अरे! तेरी सुख-शत्या बीच, होगा मेरा प्रथम-प्रभात ॥  
 प्रभो! बीती विभावरी आज, हुआ अरुणोदय शीतल-छाँव ।  
 झूमते शांति-लता के कुंज, चलें! अब अपने उस गाँव ॥

ॐ हीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जयमाला-पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(Dōhā)

Cinmaya hō cidrūpa prabhu! Jñātā-mātra cidēśa |  
 śōdha-prabandha Cidātmā kē, srṣṭā tuma hī ēka ||

(Rēkhātā)

Jagāyā tumanē kitānī bāra! Hu'ā nahim cira-nidrā kā anta |  
 Madira-sam'mōhana mamatā kā, arē! Bēcēta paṛā maiṁ santa ||

Ghōra-tama chāyā cārōṁ ūra, nahim nija-sattā kī pahicāna |  
 Nikhila jaṛatā dikhatī saprāṇa, cētanā apanē sē anajāna ||

Jñāna kī pratipala uṭhē taraṅga, jhāṁkatā usamēṁ ātamarāma |  
 Arē! Ābāla sabhī gopāla, sulabha sabakō cinmaya abhirāma ||

Kintu para-sattā mēṁ pratibad'dha, kīra-markaṭa-sī gahala ananta |  
 Arē! Pākara khōyā bhagavān, na dēkhā mainnē kabhī basanta ||

Nahim dēkhā nija śāsvata-dēva, rahī kṣaṇikā paryaya kī prīti |  
 Kṣamya kaisē hōṁ yē aparādha, Prakṛti kī yahī sanātana-rīti ||

Ata: Jaṛa-karmōṁ kī jañjīra, paṛī mērē sarvātmā-pradēśa |  
 Aura phira naraka-nigōdōṁ bīca, hu'ē saba nirṇaya hē! Sarvēśa ||

Ghaṭā ghana-vipadā kī barasī, ki ṭūṭī śampā mērē sīśa |  
 Naraka mēṁ pārada-sā tana ṭuka, nigōdōṁ madhya anantī mīca ||

Karēṁ kyā svarga-sukhōṁ kī bāta! Vahāṁ kī kaisī adbhuta-ṭēva!  
 Anta mēṁ bilakhē chaha-chaha māsa, kahēṁ hama kaisē unakō dēva||

Daśā cārōṁ gati kī dayanīya, dayā kā kintu na yahāṁ vidhāna |  
 Śaraṇa jō aparādhī kō dē, arē! Aparādhī vaha bhagavān ||

Arē! Miṭṭī kī kāyā bīca, mahakatā cinmaya bhinna atīva |  
 Śubhāśubha kī jaṛatā tō dūra, parāyā-jñāna vahāṁ parakīya ||

Ahō! Cit parama-akartā nātha! Arē! Vaha niṣkriya tattva-viśēśa |  
 Aparimita akṣaya vaibhava-kōṣa, sabhī jñāni kā yaha parivēśa ||

Batāyē marma arē! Yaha kauna, tumhārē bina vaidēhī nātha!  
 Vidyātā śiva-patha kē tuma ēka, paṛā maiṁ taskara-dala kē hātha ||

**Kiyā tumanē jīvana kā śilpa, khirē saba mōha-karma aura gāta |  
Tumhārā pauruṣa-jhañjhāvāta, jhaṛa gayē pīlē-pīlē pāta ||**

**Nahīṁ prajñā-āvartana sēṣa, hu'ē saba āvāgamana aśēṣa |  
Arē prabhu! Cira-samādhi mēṁ līna, ēka mēṁ basatē āpa anēka ||**

**Tumhārā cit-prakāśa kaivalya, kahēṁ tuma jñāyaka lōkālōka |  
Ahō! Basa jñāna jahāṁ hō līna, vahī hai jñēya vahī hai bhōga ||**

**Yōga-cāñcalya hu'ā avarud'dha, sakala caitan'ya nikala-niṣkampa |  
Arē! Ō yōgarahita yōgīṣa! Rahō yōrī kāla anantānanta ||**

**Jīva kāraṇa-paramātma trikāla, vahī hai antastattva akhaṇḍa |  
Tumhēṁ prabhu! Rahā vahī avalamba, kārya-paramātma hu'ē nirbandha ||**

**Ahō! Nikharā kāñcana caitan'ya, khilē saba āṭhōṁ kamala punīta |  
Atīndriya-saukhyā cirantana-bhōga, karō tuma dhavala-mahala kē bīca ||**

**Uchalatā mērā pauruṣa āja, tvarita ṭūṭēṅgē bandhana nātha!  
Arē! Tērī sukha-śayyā bīca, hōgā mērā prathama-prabhāta ||**

**Prabhō! Bītī vibhāvarī āja, hu'ā aruṇōdaya śītala-chāṁva |  
Jhūmatē śānti-latā kē kuñja, calēṁ! Aba apanē usa gāṁva ||**

*ॐ hrīṁ śrī sid'dhacakrādhipatayē sid'dhaparamēṣṭhinē jayamālā-pūrṇārghyāṁ nirvapāmīti svāhā |*

(दोहा)

**चिर-विलास चिद्ब्रह्म में, चिर-निमग्न भगवंत् |  
द्रव्य-भाव स्तुति से प्रभो! वंदन तुम्हें अनंत ॥**

(Dōhā)

**Cira-vilāsa cidbrahma mēṁ, cira-nimagna bhagavanta |  
Dravya-bhāva stuti sē prabhō! Vandana tumhēṁ ananta ||**

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

|| Ityāśīrvāda: Puṣpāñjalim kṣipēt ||

\*\*\*\*\*